गोलालारीय समाज का मुखपत्र

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017

मासिक
गोलालारीय दर्शन

लेट पोस्टिंग

अपनों के साथ अपनी बातें

सेवा में,

क्षमावाणी विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 8 अंक : 12 पृष्ठ संख्या : 8 माह – 15 अक्टूबर 2017 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

नमोस्तु शासन जयवंत हो

10 साल बाद इन्दौर में एक बार फिर जैनेश्वरी दीक्षा का साक्षी बना । जब आठ दीक्षार्थियों ने शुक्रवार को आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागरजी महाराज के सानिध्य में मुनि दीक्षा ली । आठों को दीक्षा देने से पहले आचार्य श्री ने मंच से सभी दीक्षार्थियों से अंतिम बार पूछा- अभी भी समय है, फिर विचार कर लो । क्या करना है ? **दीक्षार्थी बोले – नमोस्तु भगवन, वैराग्य जीवन स्वीकार है ।** आचार्य श्री ने कहा कि मात्र कपड़े उतारने से साधु नहीं हुआ जा सकता है । अभी आपका दीक्षा संस्कार नहीं हुआ है आप सिर्फ दिगम्बर हुए । यह स्वच्छंदता का नहीं, कठिन साधना का मार्ग है । श्री एवं स्त्री से हमेशा दूर रहना । यह अरिहंत की वेशभूषा है इसमें कलंक नहीं लगने देना । अपनी आत्मा का उद्धार करने के लिए मुनि दीक्षा लेने जा रहे हो । भोजन नहीं मिले तो समाज को दोष नहीं देना । समारोह के दौरान '**नमोस्तु शासन जयवंत हो**' के नारे गूंजते रहे । आयोजन समिति के आजाद जैन, अशोक खासगीवाला, टीके वैद्य, संजय जैन मैग्नम टॉवर, मनीष मोना, सुधेश जैन ने बताया कि दीक्षा से पहले विशेष प्रक्रिया होती है । बुधवार को सांसारिक शादी की तरह सन्यासी की गोद भराई, मंगल गीत, मेहंदी,उबटन, हल्दी की रस्में हुई। बारात की तरह बिनौली निकली । गुरुवार को आहार चर्या के साथ बर्तन, पात्रादि का त्याग और केश लोच हुआ ।

3 माह पूर्व मालवा की धर्म नगरी इन्दौर उस समय धन्य हो गई जब श्रमण संस्कृति के उन्नायक आध्यात्मिक संत आचार्यरत्न, चर्या शिरोमणि 108 श्री विशुद्ध सागरजी महाराज ने अपने 21 शिष्यों के साथ नगर के कंचन बाग स्थित समवशरण मंदिर में चातुर्मास का संकल्प लिया । 9 जुलाई रविवार का दिन इन्दौर वासियों के लिए बड़भागी था जब देश भर के विभिन्न शहरों से आए हजारों श्रावकों ने नमोस्तु शासन जयवंत हो के नारे से बास्केट बाल परिसर को गुंजायमान कर कलश स्थापना के साक्षी बने । गुरु पूर्णिमा का पावन दिन और गुरु भक्तों का अपने गुरु के प्रति समर्पण जिन धर्म की प्रभावना को उत्कृष्ट स्वरुप प्रदान कर रहा था । ध्वजारोहण से प्रारंभ हुए अनेक कार्यक्रमों का आनंद उपस्थित श्रावकों ने पूर्ण मनोयोग से लिया । कलश स्थापना पश्चात ज्ञान की सरिता का बांध इन्दौर वासियों को मिल गया जिसमें श्रावक निरंतर डुबकी लगाकर अनवरत अपने कर्मों की निर्जरा कर रहे है । पूज्य गुरुवर की विशुद्ध अध्यात्मिक वाणी की दिव्य देशना का रसपान समवशरण जिनालय परिसर में हजारों भक्त कर रहे है तत्पश्चात् आहारचर्या के समय सैकड़ों श्रावकगण हे स्वामी नमोस्तु नमोस्तु अत्रो-अत्रो तिष्ठो तिष्ठो का उच्चारण करते हुए यही भावना भाते है कि आज मेरे चौके में मुनिराजों के आहार हो जाए । दोपहर आध्यात्मिक प्रवचन, शाम को गुरु भक्ति, आरती व रात्रि में पं. श्री रतनलालजी शास्त्री के माध्यम से श्रावकों का संपूर्ण दिन धर्ममय होता है । आचार्यश्री का हृदय हिमालय की तरह उन्नत व विशाल है । आपके हृदय में विराजित वात्सल्य व करुणा आपकी आध्यात्मिक प्रवचन शैली प्रत्येक श्रावक को उत्तरोत्तर ऊंचा उठने के लिये प्रेरित करती है व आपके स्नेहिल सानिध्य में परम शांति का अनुभव कराती है, यही कारण है कि किसी भी उम्र का श्रावक हमेशा आपको अपने निकट पाता है । पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व के अवसर पर श्रावक संस्कार शिविर में श्रावकों ने अपने जीवन की उत्कृष्ट चर्या का पालन कर धर्म आराधना कर नर से नारायण बनने के अपने मार्ग को प्रशस्त किया । ज्ञान की गंगा एक ही जगह प्रवाहित न हो इसलिए पर्यूषण पर्व के समापन पश्चात नगर की विभिन्न कॉलोनियों से आए श्रावकों की प्रार्थना पर आचार्यश्री ससंघ नगर के मंदिरों में प्रवास कर सभी को धर्म की सरिता में डुबकी लगाने का अवसर प्रदान कर रहे है । इसी तारतम्य में न्यू देवास रोड स्थित न्यास भवन पर गोलालारीय समाज का क्षमावाणी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागरजी महाराज के सुयोग्य शिष्य 108 श्री आस्तिक्य सागर जी एवं श्री प्रणीत सागर जी जो कि ग्रहस्थ जीवन में गोलालारीय समाज के है उनके पावन सानिध्य में संपन्न हुआ । मुनिद्वय ने अपनी मंगलमयी

शेष पृष्ठ 6 पर...

श्रमण मुनिश्री 108 आस्तिक्य सागरजी महाराज

पूर्व नाम – बा. ब्र. श्री केतन जैन ❋ पिताजी – श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ❋ माताजी – श्रीमती स्नेहलता जैन ❋ जन्म दिनांक व स्थान – 06.03.1984, इन्दौर ❋ लौकिक शिक्षा – बी. फार्मा ❋ मुनि दीक्षा – 8.11.2011 ❋ दीक्षा स्थल – मंगलगिरी (सागर) ❋ आपने गहन आगम का अध्ययन कर करीब 5000 गाथा, सूत्र, श्लोक स्मरण में है । प्रवर्तक पद पर आरूढ़ रहकर पूरे संघ की शयनादि व्यवस्था देखते है । वर्तमान में संघस्थ रहकर दीक्षा पश्चात 15000 कि.मी. से अधिक विहार कर चुके है । आप मौन प्रिय है व आपके जुड़वा भ्राता भी मुनि है ।

समाज गौरव मुनिद्वय 108 श्री आस्तिक्य सागरजी व श्री प्रणीत सागरजी महाराज

श्रमण मुनिश्री 108 प्रणीतसागरजी महाराज

पूर्व नाम – बा. ब्र. श्री चेतन जैन ❋ पिताजी – श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ❋ माताजी – श्रीमती स्नेहलता जैन ❋ जन्म दिनांक व स्थान – 06.03.1984, इन्दौर ❋ लौकिक शिक्षा – बी.कॉम, एम.बी.ए. ❋ मुनि दीक्षा – 6.10.2013 ❋ दीक्षा स्थल – नागपुर ❋ आपने गत 3 वर्षों में समयसार (समय देशना) आदि 27 ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है । ग्रंथ सृजन व शास्त्रों को अंग्रेजी में अनुवाद में आपकी विशेष रुचि है । गत 2 वर्षों से चातुर्मास में लगातार 11 निर्जल उपवास आपने किये है । दीक्षा पश्चात 12000 कि.मी. से अधिक विहार किया है ।

क्षमा भाव सहित – हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका में श्रीजी व आचार्य श्री के चित्र प्रकाशित न होवे परन्तु इन्दौर में दीक्षा समारोह होने व समाज रत्न मुनिश्रीद्वय का आशीर्वाद मिलने के मोह वश हमनें चित्र प्रकाशित किये है ।

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है । संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है ।

परामर्श प्रमुख
श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद
प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136
सह संपादिका
श्रीमती अनुपमा-रजनीश जैन, 9009066884
श्रीमती साधना-सुनील जैन, 8602696165
कोषाध्यक्ष
सुधेशकुमार जैन, 9827254111
प्रबंध संपादक
राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972
खुशालचंद जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227
संयोजक एवं प्रकाशक
बाहुबली जैन, 9827247847
* विशेष सहयोगी *
डॉ. आनंदकुमार जैन, विदिशा
श्री पूरनचंद धन्यकुमार जैन, महरौनी
श्री देवेन्द्रकुमार राजकुमार जैन, भोपाल
श्री अजयकुमार जैन, ललितपुर
श्री कुन्दनलाल मनोरिया, विदिशा

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड, इन्दौर पर भेजें।

महामहिम राष्ट्रपति श्री कोविंदजी ने किए आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन

प्रकाशचंद जैन, नागपुर। महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंदजी ने परम पूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज व क्षेत्र के सुप्रसिद्ध मंदिर में 1008 भगवान शांतिनाथ के दर्शन किए। राष्ट्रपति कोविंद ने आचार्यश्री को श्रीफल अर्पण कर आशीर्वाद लिया। इस दौरान राज्यपाल श्री सी. विद्यासागर, मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस, केंद्रीय मंत्री श्री नितीन गडकरी, पालकमंत्री श्री चंद्रशेखर बावनकुले, सांसद श्री कृपाल तुमाने, विधायक श्री डी. मल्लिकार्जुन रेड्डी, नगराध्यक्ष श्री दिलीप देशमुख

आदि उनके साथ थे। मंदिर व्यवस्थापन द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। राष्ट्रपति और आचार्यश्री के बीच अनेक विषयों पर चर्चा हुई। दर्शन के बाद आचार्य श्री के कक्ष में राष्ट्रपतिजी ने भारतीयत्व, संस्कृति, सभ्यता की पहचान बढ़ाने, स्त्रीशिक्षा का सार्वजनिक प्रचार, मातृभाषा में शिक्षा, खादी, स्वदेशी का प्रचार संबंधी नियोजित नीति विषयों पर संवाद किया। राष्ट्रपति को मंदिर कमेटी की ओर से हस्तकरघा से तैयार किया गया कोट और स्मृतिचिह्न प्रदान किया गया।

गोलाकोट की गौरव गरिमा —

प्रवीण जैन, झांसी। दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के 50वें संयम स्वर्ण दीक्षा महोत्सव के अवसर पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र तीर्थोदय गोलाकोट में मध्यप्रदेश के वित्त एवं वाणिज्य कर मंत्री जयंत मलैया के मुख्य आतिथ्य एवं एस.के. जैन आईपीएस (पूर्व विशेष पुलिस आयुक्त, दिल्ली) की अध्यक्षता में विद्यांजलि लोकार्पण के अंतर्गत 8 सोपानों को समर्पित किया गया।

गोलाकोट में विराजमान मूलनायक भगवान आदिनाथ की भव्य प्रतिमा को मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से उच्चासन मिलने के बाद मात्र 364 दिनों में तीर्थ का जो कायाकल्प हुआ है वह वर्णनातीत है। भगवान के महामस्तकाभिषेक एवं 1008 कलशों से श्रेष्ठीजनों द्वारा अभिषेक के लिए खनियाधानां के आस पास के 80 गांवों के साथ ही बुंदेलखंड, कानपुर, दिल्ली, आगरा, ग्वालियर, मथुरा, भोपाल तमाम शहरों से भारी जन समूह पहुंचा।

मुख्य अतिथि श्री जयंत मलैया ने विद्यांजलि, आचार्य विद्यासागर श्रमण वसतिका, गुरुवर ज्ञानसागर श्रमण वीथिका, सुधा कलश, संयम स्वर्ण सरोवर, मुक्ताकाश मूक माटी रंगमंच, निसर्ग निलय, गुरु कृपा अन्न प्रसाद, सोहा समर्पण उद्यान के शिलापट्टों का लोकार्पण करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश के जंगली क्षेत्र में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की कृपा से एवं मुनिश्री सुधा सागरजी महाराज की प्रेरणा व आईपीएस एस.के. जैन के सक्रिय प्रयासों से वह तीर्थ विश्व पटल पर अपनी अनूठी पहचान बना रहा है। अध्यक्ष श्री एस.के. जैन ने बताया कि वर्ष 2014 अक्टूबर माह में जब वह बुंदेलखंड की तीर्थ यात्रा पर आये तो गोलाकोट के आदिनाथ भगवान नजरों में समा गए। मुनिश्री सुधासागरजी की प्रेरणा से 364 दिनों में समर्पण के 8 सोपान इस तीर्थ की बड़ी उपलब्धि है। विधान प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी प्रदीप भैया 'सुयश' ने तीर्थ के विकास में मुनिश्री सुधासागरजी के मंगल आशीर्वाद की चर्चा करते हुए तीर्थ प्रांगण में श्रद्धालुओं से सैकड़ो वृक्षों का रोपण भी कराया। 'दैनिक विश्व परिवार' के संपादक प्रवीण कुमार जैन ने कहा कि बुंदेलखंड में सुप्राचीन तीर्थ गोलाकोट पर जैन प्रतिमाओं के सिरभंजन की घटना से पूरे देश में क्षोभ व्याप्त हुआ था। मुनि श्री सुधासागरजी ने यहां प्रवास कर विकास का जो आशीर्वाद दिया है, मात्र एक वर्ष में 35 एकड़ में फैले इस प्रांगण में साधुजनों की साधना हेतु बनी कुटियाँ, सरोवर, अतिथि गृह, भोजन शाला व भव्य मंदिर निर्माण में वह सिद्ध कर दिया है कि बुंदेलखंड क्षेत्र में गोलाकोट साधुजनों की साधना स्थली के साथ ही अनूठा तीर्थ स्थल होगा। जहाँ पर देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं का जमावड़ा बना रहेगा।

तीर्थक्षेत्र के कार्याध्यक्ष व प्रसिद्ध वास्तु शास्त्री राकेश कुमार जैन ने क्षेत्र के परम शिरोमणि संरक्षक सत्येन्द्र कुमार, चेतन जैन, राजधानी ग्रुप दिल्ली के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि कार्य तीव्र गति से चल रहा है और आगामी फरवरी माह में इस तीर्थ पर विशाल पंचकल्याणक हेतु आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से सानिध्य की प्रार्थना की गई है।

बाल संरक्षण आयोग मध्यप्रदेश के अध्यक्ष श्री राघवेन्द्र शर्मा ने क्षेत्र की रमणीयता पर प्रकाश डालते हुए जैन समाज के योगदान की प्रशंसा की।

वक्ताओं में विजय जैन धौर्रा अशोक नगर, राजकुमार जैन शिवपुरी, एसडीएम संजीव जैन, अरविंद जैन सीए, मथुरा चौरासी के अध्यक्ष सेठ विजय जैन आदि ने विचार व्यक्त किये। अतिथियों का स्वागत अमित जैन मंगल, प्रमोद मोदी, राजीव जैन गूडर, ताराचंद्र चौधरी, आमोद जैन कानपुर आदि ने किया।

समारोह का संचालन राष्ट्रीय कवि चन्द्रसेन जैन भोपाल ने किया तो वहीं श्रमण संस्कृति संस्थान के अंतर्गत चल रहे आचार्य विद्यासागर महाराज पब्लिक स्कूल के छात्र छात्राओं ने सांस्कृति कार्यक्रमों व नाटकों की भव्य प्रस्तुति दी।

आभार ज्ञापन तीर्थ के महामंत्री कीर्ति जैन बामौर कला ने किया।

गोलाकोट की बदलती तस्वीर और सक्रिय प्रयास

जिला शिवपुरी के खनियाधाना से महज 8 किमी. दूर दक्षिण दिशा में बुंदेलखंड विंध्यांचल पंच पर्वतों के मध्य गोलाकोट जैन मंदिर तीर्थ अपना विशिष्ठ स्थान रखता है। यह तीर्थ गोलाकोट पहाड़ियों के बीच गोल बना हुआ है। जमीन से 264 सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद अथवा सड़क मार्ग से मंदिर तक पहुंचा जाता है। यहाँ भगवान आदिनाथ से लेकर महावीर स्वामी तक की हजारों वर्ष प्राचीन प्रतिमायें विराजमान है। चमत्कारी घटनाओं के बारे में बताया जाता है कि प्राकृतिक रूप से व जैन समाज के प्रयासों से यहाँ लगभग 90 कुएँ व 89 बावड़ियाँ रही है। इन बावड़ियों में स्नान करने से चर्म रोग समेत अन्य रोगों का निदान भी होता है। गोलाकोट तीर्थ विगत 7-8 वर्षों पूर्व तक जंगल के बीच छिपा ऐसा तीर्थ रहा जिस पर यदाकदा दर्शनार्थी पहुंचते थे और चीराने का लाभ उठाकर तस्करों ने यहां पर हजारो वर्ष प्राचीन 32 प्रतिमाओं के सिरभंजन कर दिए थे। जिसके बाद काफी प्रयास करने पर सीबीआई द्वारा यह सिर हासिल कर लिए गए थे। तब झांसी में बुंदेलखंड के प्राचीन तीर्थों की रक्षा के लिए 'दैनिक विश्व परिवार' के प्रधान संपादक कैलाशचंद्र जैन द्वारा त्रिदिवसीय बुंदेलखंड तीर्थ रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसमें समाजश्रेष्ठी श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल, साहू रमेश जी जैन, एस.के. जैन आईएएस, श्री निर्मल कुमार सेठी समेत बुंदेलखंड के मंत्रीगणों व तीर्थों के पदाधिकारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था और तीर्थ रक्षा की जागरूकता के साथ प्रतिमायें हासिल हुई थीं। अब सेवा निवृत्त आईपीएस अधिकारी एस.के. जैन के रुचि लेने से आचार्य विद्यासागरजी के नाम पर खनियाधानां में भव्य कालेज की स्थापना एवं गोलाकोट में बहुआयामी विकास से यह तीर्थ बुंदेलखंड के तीर्थों में अग्रणीय हो रहा है। यदि ऐसी ही रुचि शासन प्रशासन में बैठे लोग लें तो वह दिन दूर नहीं जब श्रमण संस्कृति को जीवंतता मिलती रहे और विद्यालयों व तीर्थों के माध्यम से भारत में 'अहिंसा परमो धर्म: जयवंत' होता रहे।

संयम स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर भोपाल में रंगारंग आयोजन।

संजय जैन 'लालू', भोपाल। म.प्र की राजधानी भोपाल में 5 अक्टूबर को रवीन्द्र भवन में आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के 50 वें दीक्षा संयम स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर उनके जन्मदिवस पर आयोजित इस रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम में जैन धर्म पर आधारित रंगारंग प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में सांसद श्री आलोक सज्जरजी का कमेटी सदस्यों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने जैन समाज से प्रभावित होकर घोषणा कि भोपाल में एक भव्य स्वागत द्वार शीघ्र ही बनवाया जावेगा व नगर में एक विद्यासागर कीर्ति स्तंभ का निर्माण भी किया जावेगा, जो पूरे देश में अपने आप में अद्भुत होगा। महापौर श्री आलोक शर्मा का सम्मान किया गया। श्री आलोक शर्माजी ने घोषणा की बोर्ड आफिस चौराहे से हबीबगंज नाके तक की सड़क को विद्यासागर मार्ग के नाम से जाना जावेगा। आचार्यश्री का 51 दीपों से भव्य आरती का आयोजन रहा। आचार्य श्री के भोपाल आगमन पर "कैसा था भोपाल के हर जैन का माहौल" का नृत्य नाटिका के जरिये कु. काजल जैन व उनकी टीम ने दर्शाया। रुपल जैन व उनके साथियों ने आर्मी थीम पर शानदार व प्रेरणादायक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। समाज के बच्चों ने दिन रात मेहनत से तैयार "ऐसी थी चंदनबाला" की भावविभोर प्रस्तुति दी, जिसे उपस्थित समाजजनों ने काफी सराहना की। सकल दिगम्बर समाज के तत्वाधान में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में जस्टिस एन.के.जैन, जस्टिस अभय गोहिल, जस्टिस विमला जैन, मनोहरलाल टोंग्या, पवन जैन आई.पी.एस, प्रदीप मामा, नरेन्द्र जैन, व नगर के कई गणमान्य सदस्य जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम सूत्रधार रवीन्द्र जैन पत्रकार के साथ मंच संचालन पवन जैन, मनोज जैन, रश्मि जैन ने किया। नगर में एक और रंगारंग कार्यक्रम दिगम्बर जैन पंचायत कमेटी ट्रस्ट चौक द्वारा अहिंसा स्थली, इकबाल मैदान में आयोजित किया गया। सिद्धत्व यात्रा महोत्सव का शुभारंभ श्रद्धा और भक्ति के साथ शुरु हुआ। प्रात:काल में शोभा यात्रा निकाली गयी, जो सोमवारा होते हुयी अहिंसा स्थली पर पहुंची। अभिषेक, शांतिधारा पश्चात विभिन्न पाठशालाओं के नन्हें मुन्ने बच्चों ने जिन पूजन व गुरु पूजन की। इसके साथ ही आचार्य श्री द्वारा रचित 50 पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। दोपहर 2 बजे परम पूज्य मुनिवर निर्णय सागरजी एवं पूज्य पदम सागरजी महाराज के मंगल सानिध्य में विद्यागुरु विधान का आयोजन किया गया जिसमें समाजजनों ने हर्षोल्लासपूर्वक अपनी सहभागिता निभायी। शाम 7 बजे आचार्यश्री की महाआरती की गयी। शहर की विभिन्न पाठशालाओं के बच्चों द्वारा आरती को भव्य स्वरुप प्रदान किया गया। सामाजिक बुराईयां एवं कुरीतियों के दुष्परिणामों पर आधारित सांस्कृतिक नृत्य नाटिका ने उपस्थित समाजजन को बांधे रखा। कार्यक्रम के अंत में पाठशाला की दीदीओं का सम्मान किया गया।

हार्दिक बधाईयाँ

राष्ट्रीय अधिवेशन में नारी गौरव उपाधि से सम्मानित हुई विजया दीदी

मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर महाराज संघ के सानिध्य में किशनगढ़ में आयोजित दिगम्बर जैन महिला महासमिति के 24 वें राष्ट्रीय महिला अधिवेशन में बर्धमान महिला संभाग ललितपुर की अध्यक्षा विजया जैन "दीदी" को नारी गौरव उपाधि से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर नारी सम्मान को बढ़ाने में श्रेष्ठ योगदान देने के आधार पर ही महासमिति के सदस्याओं द्वारा चयनित प्रत्याशी को दिया जाता है। गीतकार संगीतकार स्व. रवीन्द्र जैन के भ्राता एवं महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष मणीन्द्र जैन दिल्ली ने विजया दीदी को सम्मान पत्र भेंट करते हुए उन्होने भारतीय संस्कृति के प्रचार - प्रसार में अनवरत रूप से कहानी लेखन, रेडियो प्रसारण तथा अपने बहुआयामी व्यक्तित्व द्वारा सबको प्रोत्साहित करने एवं अपनी सक्रियता और उत्साह से जनमानस को प्रेरित करने रहने की प्रशंसा की। विजया जैन द्वारा नारी समस्याओं को लेकर लिखी कहानियों के दो संग्रह 'अपने हिस्से की धूप' व 'संकल्प' प्रकाशित हो चुके हैं। नारी सम्मान के प्रति समाज को जागरूक करने को लेकर प्रयत्न सराहनीय है। कहानी संग्रह के समर्पण में उन्होंने लिखा है कि 'उन सब को समर्पित, जो महिलाओं का उनके अधिकार और सम्मान दिलाने के लिए संघर्षरत है।' राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठा शीला डोड्या जयपुर के संयोजन में आयोजित किशनगढ़ महिला अधिवेशन में देश के विभिन्न अंचलो से चार हजार से भी ज्यादा सदस्यों ने प्रतिभाग किया। सदस्यों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम और शोभायात्रा आदि कार्यक्रमों में भी उपस्थिति दर्ज कराई। ललितपुर से सरोज सिमरा, कल्पना समैया, मीना कबाडी, अनीता मोदी, सरिता जैन, सुनीता बरया, किरण सतभैया, मौसमी अलवा, मधु खजुरिया आदि 50 से अधिक समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों ने सक्रिय योगदान दिया।

परम पूज्य राष्ट्रसन्त गणाचार्य विराग सागर जी महाराज के राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण महोत्सव पर आयोजित यति सम्मेलन युग प्रतिक्रमण महा-महोत्सव के अवसर पर आयोजित।

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान समारोह में कु. सुरभि जैन पिता शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा को उनकी शैक्षणिक योग्यता एम.टेक में 86% अंक प्राप्त करने पर गणाचार्य विराग सागर के सानिध्य में अवार्ड व शाल, श्रीफल से सम्मानित किया गया।

पुलक जन चेतना मंच मुख्य शाखा झांसी के परम संरक्षक श्री राजू जैन सिरसावालों का भामाशाह अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपने यति सम्मेलन में पूर्ण मनोयोग से योगदान देकर आयोजन को सफल बनाने में सार्थक प्रयास किये। आप बुंदेलखंड में हो रहे समस्त धार्मिक आयोजनों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हुए जैन धर्म की प्रभावना को बढ़ाने का सतत् प्रयास कर रहे है।

भिण्ड में आर्यिका जैनेश्वरी दीक्षा का महोत्सव संपन्न।

आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी के ससंघ सानिध्य में आर्यिका दीक्षा महोत्सव के अवसर पर प्रात:काल 24 तीर्थंकर भगवान एवं बा. ब्र. बहिनों की शोभायात्रा मुख्य मार्गों से होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। श्रेष्ठीजन हाथी व रथ पर धर्म ध्वजा लिये हुये चल रहे थे। प्रज्ञसंघ एवं पार्श्वनाथ युवा मंडल एवं महिला मंडल, चन्द्रप्रभु महिला मंडल, अहिंसा ग्रुप आदि सामाजिक संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ में चलते हुए समाजजन कीर्ति स्तंभ परिसर पहुँचे। जिसमें श्रद्धालुओं द्वारा जगह जगह स्वागत में भगवान की आरती की तथा भक्ति नृत्य किया।

मोक्ष मार्ग तलवार की धार पर चलने के बराबर है - विभाश्री माताजी

कीर्तिस्तंभ परिसर में आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी के संघस्थ बहिनों की जैनेश्वरी दीक्षा 30 सितम्बर को दोपहर 12 बजे से प्रारंभ हुई। खचाखच भरे पांडाल में आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी ने प्रवचनों में कहा कि मोक्ष मार्ग तलवार की धार पर चलने के बराबर है दीक्षार्थियों ने दीक्षा के लिए प्रार्थना की। इस भव से दीक्षा के भाव होना कठिन है किसी संत के माध्यम से संत बन भी जाये तो निभाना कठिन है, जिस प्रकार से दोस्ती करना आसान है लेकिन निभाना कठिन है।

माताजी ने कहा कि एक परिवार की चार बहिनें इस मोक्ष मार्ग पर आई है। देवेन्द्र नगर की जब ये बहिनें घर से निकली तो दूसरे भाई बहिनों ने इन्हें रोका लेकिन वैराग्य सच्चा होता है तो उन्हें कोई रोक नहीं पाता है। करीब दो वर्षों से निरंतर इस मार्ग पर आने के लिये वे निवेदन करती आ रही थी और आज वह दिन आया कि उन्हें जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की जा रही है। जिनके भाव बिगड़ते है उनका भव बिगड़ जाता है। समता साधु का आभूषण है 28 मूलगुणों की साधना, जो बहुत कठिन है। कीर्ति स्तंभ परिसर में आर्यिका गणिनी विभाश्री माताजी ने संघस्थ सात बहिनों को जैनेश्वरी दीक्षा में प्रात: काल केशलोच किया गया एवं दीक्षा के समय चौक पूरकर उस पर बहिनों को बिठाकर माताजी ने संस्कार करते हुए उनके परिवारजन एवं श्रद्धालुओं से पिच्छी कमंडल भेंट कराये तथा साथ ही माताजी ने नामकरण संस्कार भी किया। भिण्ड नगर में कई वर्षों बाद जैनेश्वरी दीक्षा का आयोजन बड़े धूमधाम के साथ आयोजित किया गया।

इसके पूर्व अनेक नगरों में बनौली कार्यक्रम धूमधाम पूर्वक मनाया गया। देवेन्द्र नगर की 6 बहनों ने एक साथ दीक्षा ग्रहण करने का संकल्प लेकर धर्म के प्रति आस्था का जो इतिहास रच दिया है वह वहाँ के जैन मानस को आजीवन याद रहेगा। 30 सितम्बर को आयोजित भिंड में होने वाली दीक्षा समारोह में सातों बहनें दीक्षा ग्रहण कर आर्यिका बनी। दीक्षा लेने वाली 6 बहनों में राजुल दीदी, प्रीति दीदी व रोशनी दीदी, नेहा दीदी आपस में सगी बहनें हैं। इनके साथ शिखा दीदी, प्रियंका दीदी, भी नगर की शान है। सुशीला दीदी, झांसी की दीक्षार्थी हैं। इन्होंने स्नातक और उसके बाद स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की है और अपना जीवन जनकल्याण के लिए समाज को समर्पित करने का संकल्प लिया है। एक ही कस्बे में जन्मी, पली-बढ़ी और शिक्षित हुई 6 बहनों को विदाई देते वक्त सबकी आंखें नम हो आई। झांसी नगर में दीक्षार्थी बहनों का बिनौला कार्यक्रम आचार्य विद्यासागर सभागृह में मुनिश्री 108 प्रेक्षासागरजी महाराज के सानिध्य में संपन्न हुआ। महाराजजी ने बहनों को संबोधित करते हुए कहा कि संसार में मनुष्य जीवन प्राप्त करना दुर्लभ है। स्त्री पर्याय को प्राप्त कर उसके सर्वोच्च शिखर पर पहुँचना जिन दीक्षा से ही संभव है। जिसे यह बहनें हासिल कर स्वयं पर कल्याण करेंगी। सुशीला दीदी नगर के करगुंवा तीर्थ क्षेत्र के निकट निवास करने वाले अशोक जैन की धर्मपत्नी व बाहुबली जैन की माँ है। 63 वर्ष की आयु में सभी सांसारिक रिश्तों को त्याग कर वैराग्य मार्ग में प्रवेश करने हेतु अंतिम विदाई ली।

इस अवसर पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। दीक्षार्थियों के वैराग्य पथ पर बढ़ने की प्रशंसा की। उपस्थित जन समूह ने दीक्षार्थी बहनों की गोद भराई की और अंतिम लौकिक श्रृंगार किया। बहनों ने सभी को सन्मार्ग पर बढ़ने का आशीर्वाद दिया। झाँसी में संपन्न बिनौली कार्यक्रम का संचालन पंचायत महामंत्री प्रवीण जैन ने व आभार करगुंवा क्षेत्र के मंत्री सुभाष जैन ने व्यक्त किया। भिण्ड में आयोजित कार्यक्रम में सकल दिगम्बर जैन समाज के सभी सदस्यों ने पूर्ण मनोयोग से कार्यक्रम को सफल बनाने में अमूल्य योगदान दिया। इस अवसर पर सांसद श्री भागीरथ प्रसाद, विधायक श्री नरेन्द्र कुशवाह, जनपद व नगर अध्यक्षों के साथ वरिष्ठ पार्षद सहित अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। राजेन्द्र जैन बिल्लू, जगदीश जैन, राजेश जैन बॉबी, अरविन्द जैन, सौरभ जैन पुच्चू, धर्मेन्द्र जैन, मनोज जैन, राजेश जैन, विवेक जैन मोदी, निकेत जैन निक्की, सचिन जैन टिंकल, संजय जैन दीपू, नरेश जैन भीम, कमलेश जैन तांतरी, आकाश जैन मोदी, अंकुश जैन आदि लोग उपस्थित थे।

क्षमाशील बने।

निर्मलता का सुखद आभास कराता है क्षमावाणी पर्व। क्षमावाणी का पर्व विश्व मैत्री दिवस के रूप में हम सभी मनाते हैं पर्यूषण पर्व के बाद ही क्षमावाणी का पर्व भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों में भी जहां-जहां जैन समाज है वहां भी उतने ही उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है जितना कि भारत में जैन समुदाय के लोग मनाते हैं। सभ्य समाज में क्षमा याचना और क्षमा दान का विशेष महत्व हैं। यह क्षमा-याचना और क्षमादान चाहे दो अथवा समूह के या कि राष्ट्रों के बीच यदि ईमानदारी के साथ क्षमा याचना की जाती है तो अपमान की भावना का निराकरण तो करती ही है साथ ही क्षमाशील भी बनाती है। क्षमा याचना में रोग निवारण की शक्ति निहित है। लोग क्षमा याचना को दुर्बलता का पर्याय समझ लेते हैं जबकि क्षमा याचना के लिए चारित्रिक दृढ़ता भी आवश्यक होती है। इस तरह किसी व्यक्ति के द्वारा किए गए अप्रिय आचरण अथवा अपराध का उसी रूप में उत्तर ना देना क्षमा कहलाता है। किसी ने हमसे अनुचित व्यवहार किया और उस व्यक्ति के भूल स्वीकार करने पर हमने उससे किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार ना करने का आश्वासन दिया। यह आश्वासन ही क्षमा कहलाता है। क्षमा उदारता, महानता और विनम्रता का पर्याय है। क्षमाशीलता से व्यक्ति छोटा नहीं होता, न ही उसके मान-सम्मान में कोई कमी आती है बल्कि वह दिनों दिन बढ़ता है। क्षमा से क्रोध की समाप्ति होती है, तनाव कम होता है और इससे मन में शांति तथा आनंद की सुखद अनुभूति होती है। क्षमा वाणी पर्व का अपना एक अलग ही महत्व है यह हमें संयम तथा सहनशीलता का पाठ पढ़ाता है एवं जीवन जीने का कला सिखाता है स्वयं से ज्ञात एवं अज्ञात कारणों से हुई भूलों से स्वयं को क्षमा करना एवं प्राणीमात्र के साथ ही इसी भाव को प्रगट करना ही इस महान पर्व की सार्थकता है।

- राजेश जैन, झाँसी

आगामी पवाजी के मेले में "प्रयास" रिश्तों को जोड़ने का... द्वितीय अंक का सशुल्क वितरण किया जावेगा। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे - कोमलचंद जैन 9329524227, बाहुबली जैन 9425903301, राजेन्द्र जैन 9424013136

* मुनिश्री क्षमासागर जी की रचित कविता *

अपनी अंतिम यात्रा का क्या खूब वर्णन किया है....
था मैं नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था....
बड़े प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था....
ना जाने था वो कौन सा अजब खेल मेरे घर में....
बच्चों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था....
था पास मेरा हर अपना उस वक्त....
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलाया जा रहा था....
जो कभी देखते भी न थे मोहब्बत की निगाहों से....
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था....
मालूम नहीं क्यों हैरान था हर कोई मुझे सोते हुए देख कर....
जोर-जोर से रोकर मुझे जगाया जा रहा था....
काँप उठी मेरी रूह वो मंजर देख कर....
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था....
मोहब्बत की इन्तहा थी जिन दिलों में मेरे लिए....
उन्हीं दिलों के हाथों
आज मैं जलाया जा रहा था!!!

सहसंपादिका की कलम से.....

"न कोई सम्मेलन न कोई धन का अपव्यय" के संदेश के साथ **'प्रयास' रिश्तों को जोड़ने का... द्वितीय अंक** का प्रकाशन किया गया। हमारी भावना के अनुरूप पत्रिका के प्रकाशन के तत्काल पश्चात इसे प्रत्याशियों के अभिभावकों तक पहुँचा दिया गया। "प्रयास" पत्रिका के इस समय प्रकाशन का उद्देश्य विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी व मेलजोल के लिए समुचित समय उपलब्ध कराना था। इस हेतु हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधियों ने पिछले कई महीनों से पूरी निष्ठा से बायोडाटा के संकलन का कार्य संपन्न किया। सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भी हमारे प्रतिनिधि लगातार सक्रिय रहे, जिन्होंने व्यक्तिगत रुचि लेकर अपना बहुमूल्य समय देते हुए समय पर बायोडाटा कार्यालय तक पहुंचाने का कार्य किया। उनकी तत्परता और सक्रिय सहयोग की वजह से ही आज हम प्रयास पत्रिका को निर्धारित समय पर अभिभावकों को पहुँचाने में सक्षम हो सके। उनके श्रम के लिए "गोलालारीय दर्शन" परिवार सदैव उनका आभारी व उनके कार्य की सराहना करता रहेगा।

"प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का" पत्रिका के प्रकाशन से देशभर के समाजजनों को अपने विवाह योग्य पुत्र पुत्रियों के संबंध करने के लिए एक बड़ा माध्यम मिला है। इस हेतु विवाह संबंधों को तय करने के लिये लोगों का उत्साह देखकर यह सिद्ध होता है कि आज के टेक्नोलॉजी प्रिय लोगों के बीच भी यह पारम्परिक माध्यम अभी भी लोकप्रिय है और यही हमारी सफलता का प्रमाण है। ऑनलाइन वैवाहिक वेबसाइट्स और इंटरनेट के विस्तार के बावजूद भी सामान्य वर्ग में इसकी विश्वसनीयता उतनी नहीं हो पाई है। लोग आज भी वैवाहिक संबंधों के लिए पारम्परिक मेलजोल और पत्रिकाओं के आदान प्रदान द्वारा संपर्क करने में ज्यादा भरोसा करते हैं। हमने इसी भावना को ध्यान में रख कर "प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का" पत्रिका के प्रकाशन का बीड़ा उठाया था। प्रसन्नता का विषय है कि 531 अभिभावकों ने हमारे इस प्रयास का स्वागत कर अपने बच्चों के बायोडाटा इसमें प्रकाशित करने हेतु हमें प्रेषित किये।

शहरों से मिले बायोडाटा की संख्या काफी हद तक संतोषजनक है किन्तु ग्रामीण और सुदूरवर्ती क्षेत्रों में अभी और प्रचार प्रसार की अत्यंत आवश्यकता है। हमारे क्षेत्रीय संवाददाताओं के साथ अभिभावकों को भी और सक्रिय होना जरुरी है क्योंकि कई विवाह योग्य प्रत्याशी इन क्षेत्रों से आज भी हैं, जो जानकारी के अभाव में वे अलग थलग पड़े हैं और संबंध होने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हमारा अगला लक्ष्य सुदूरवर्ती प्रत्याशियों को "प्रयास" से जोड़ना है, इस हेतु हमें एक सक्रिय, समर्पित और जुझारु समाजसेवियों के साथ उन अभिभावकों की भी जरुरत है, जो अपने बच्चों के लिए योग्य प्रत्याशियों के लिये सहज साधन (विवाह पत्रिका में बायोडाटा प्रकाशित करवाकर) अपनाकर अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने में सबकी मदद करें ताकि विवाह संबंधों की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सके।

इसके साथ ही आर्थिक रूप से सक्षम समाज जनों को भी इस सामाजिक कार्य में आर्थिक सहायता देने हेतु आगे आने की बहुत जरुरत है। वे अपने प्रतिष्ठानों एवं जन्मदिन, विवाह अवसरों आदि का विज्ञापन देकर गोलालारीय दर्शन व प्रयास पत्रिका को आर्थिक सहयोग प्रदान कर इसके नियमित प्रकाशन में अपनी महती भूमिका निभा सकते है। धनाभाव में कोई भी परमार्थ का कार्य अधिक समय तक आगे नहीं बढ़ता है। समाज के संपन्न महानुभावों से सदैव आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है। समाजसेवा की इस छोटी सी पहल को वृहद रुप देने के लिए आइये हम सब कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ें।

- अनुपमा जैन, सहसंपादिका

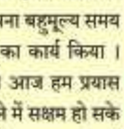

1. 001
2. **सुयश कैलाश जैन**
3. वैद्य/सिंघई
4. 05.06.92
5. 13.30
6. सुंगेली (छ.ग.)
7. बी.ई. (कम्प्यूट साइंस)
8. 5'5"/58 कि.
9. गोरा
10. व्यापार
11. 6 अंको में
12. हाँ
13. हाँ
14. पी-28, जैन मंदिर के पास क्रांति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)
15. 9893789444 9827467333

1. 002
2. **जयति डॉ. प्रमोद जैन**
3. फलौदा/सोनव्यारे
4. 01.01.92
5. 20.32
6. झांसी
7. एम.फार्मा
8. 5'2"/ 56 कि.
9. गोरा
10. -
11. -
12. -
13. नहीं
14. पारस हास्पिटल, बस स्टैण्ड रानीपुर, झांसी
15. 9451333504 9452119406

सोनागिरी में राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड में प्रतिभाओं का हुआ आत्मीय सम्मान

राजेश जैन, झांसी। आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री क्षमासागरजी की प्रेरणा से आयोजित राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड 2017 (प्रतिभा सम्मान) समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से आये होनहार जैन प्रतिभाओं का आत्मीय सम्मान मुख्य अतिथि राजस्थान महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध लेखिका, शिक्षाविद् एवं समाजसेविका प्रो. लाड़ कुमारी जैन, जयपुर ने किया। मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिरी (जिला दतिया) में मैत्री समूह के तत्वावधान में आयोजित वर्तमान के सर्वाधिक प्रतिष्ठित "अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान" हेतु इस वर्ष देशभर से कोई 1400 प्रतिभाओं की प्रविष्टि प्राप्त हुई थी। इनमें से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली लगभग 150 प्रतिभाओं का सम्मान समारोह में आमंत्रित कर आत्मीयता एवं गरिमा के साथ सम्मानित किया गया। इनमें अधिकांश विद्यार्थी ऐसे है जिन्होंने अपनी बोर्ड क्लास में शत प्रतिशत अंक पाये है। राज्य प्रशासनिक सेवा (पीएससी) परीक्षा में चयनित अनेक मेहनती प्रतिभाओं को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गवा। राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड 2017 का आयोजन 1 एवं 2 अक्टूबर को सोनागिरी में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज के जीवन पर आधारित एक जानकारी पूर्ण प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसकी सराहना सभी ने की।

प्रतिभा सम्मान समारोह के प्रथम दिन को प्रभु स्मरण के साथ उपस्थित लोगों ने प्रभातफेरी के रुप में भक्ति करके अपने दिन की शुरुआत की तत्पश्चात ब्र.संजीव भैया ने लोकप्रिय होती नवीन जैन पद्धति 'अर्हम्' के माध्यम से अवार्डियों और उनके परिजनों को विभिन्न रोगों के उपचार पर केन्द्रित योग कराया, जिसे सभी ने लाभकारी बताया। योग के बाद सभी अवार्डियों को शुद्ध वस्त्रों में सामूहिक अभिषेक, शांतिधारा और पूजन कराई गई।

राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड के दूसरे दिन पूर्वान्ह 10.30 बजे पहले सत्र का शुभारंभ यंग आर्केस्ट्रा, झांसी के मधुर मंगलाचरण, पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी के चित्र के अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। श्रीमती अर्चना जैन झांसी ने मुनिश्री की एक कविता प्रस्तुत की। इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री के प्रेरक प्रवचन अवार्डियों एवं उनके परिजनों को सुनावा गया। इस प्रसंग पर देश के जाने माने काउंसलर श्री रीतेश जैन, डायरेक्टर टाइम इंस्टीट्यूट, गाजियाबाद ने बच्चों को शानदार और रोचक ढ़ंग से से करियर काउंसलिंग दी तथा अवार्डियों के प्रश्नों के सटीक उत्तर दिये। काउंसलर श्री सिद्धार्थ जैन ने भी अवार्डियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस सत्र का सरस संचालन डॉ. सुमति प्रकाश जैन एवं श्री राजेश बड़कुल, श्रीमती रेशू मुंबई ने किया। प्रतिभाओं के सम्मान का मुख्य आयोजन दोपहर 1.30 बजे से प्रारंभ हुआ। जिसकी भव्यता, अनुशासन, प्रबंध एवं गरिमा देखते ही बनती थी। सम्मान की श्रृखंला में सबसे पहले राज्य प्रशासनिक सेवा में चयनित छात्रों का आत्मीय सम्मान किया गया। इसके बाद कक्षा 12वीं के विज्ञान, कृषि, कला और वाणिज्य संकाय की सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं तथा कक्षा 10वीं में शत प्रतिशत अंकों के साथ अन्य स्वर्णिम अंक पाने वाले अवार्डियों का सम्मान किया गवा।

चयनित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. लाड़कुमारी जैन, जयपुर ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाने के साथ साथ अपने धर्म और संस्कार को न भूले, अपने आप को बहुत प्रतिभाशाली बनाये और अपनी बात को प्रभावशाली ढ़ंग से रखे। महिलाओं के प्रति बरते जाने वाले लिंग भेद, दहेज और कन्या भ्रूण हत्या का पुरजोर विरोध करते हुए आपने कहा कि बेटियों को खूब पढ़ाईये और अपने खिलाफ होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध उन्हें डट कर आवाज उठाने योग्य बनाइए। हमें सबसे पहले बेटियों की बात हर काम छोड़ कर सुनना चाहिए। उपस्थित जनसमुदाय को यंग जैन अवार्ड की रोमांचक यात्रा पर आधारित एक विडियो दिखावा गवा, जिसे अवार्डियों ने बहुत उत्सुकता के साथ देखा। अवार्डियों से जीवन में कभी व्यसन न करने का संकल्प पत्र भी भराया गया। अंत में जब जिनेन्द्र का मधुर समूह गान कराया गया तथा मैत्री समूह के सभी सदस्यों ने सभी अवार्डी, उनके माता-पिता एवं आमंत्रित अतिथियों से मंच से हाथ जोड़कर किसी भी त्रुटि के लिए क्षमायाचना की गयी। अंतिम दिवस सभी सम्मानित प्रतिभाओं एवं उनके परिजनों को 108 मुनिश्री समयसागरजी महाराज के दर्शनार्थ हेतु अशोक नगर ले जाया गया, जहां विद्यार्थियों से मुनिश्री ने आहार ग्रहण किया व दोपहर पश्चात उनसे चर्चा कर आशीर्वाद प्रदान किया।

हमारे गौरव - योगाचार्य डॉ. फूलचन्द्र जी जैन 'योगीराज'

आपका जन्म 30 नवम्बर सन् 1942 को बैदपुर, जतारा, जिला - टीकमगढ़ (म.प्र.) में हुआ। आपने अपनी शिक्षा बी.ए.(एन.डी.), पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन योगा साइंस (सागर विश्वविद्यालय, सागर), शिक्षा विभाग में कार्यरत रहकर भी आप योग संबंधी शिक्षा सतत् प्रदान करते रहे। डिप्लोमा इन योग (अंतराष्ट्रीय विश्वायतन योगाश्रम, कटरा, जम्मू काश्मीर) से की है। योग करना-कराना, कविता पाठ, चिंतन-मनन, साहित्य सृजन में आपकी विशेष रुचि रही। आपको विभिन्न संस्थाओं द्वारा योगाचार्य, योगीराज, मध्यप्रदेश योगकिंग की उपाधि प्रदान की गई।

* आप भारतीय जैन मिलन, छतरपुर(म.प्र.) के अध्यक्ष रहे। * 'आयोग मित्र', म.प्र. मानव अधिकार आयोग से भी आप वर्षों तक जोड़े रहे। आपके परिवार में आपकी धर्मपत्नि-श्रीमती सरोज जैन (गृहिणी धार्मिक महिला) व पुत्र - 1. चि.पवन कुमार जैन, भोपाल आई.टी.एस. 2. चि. लोकेश जैन, भोपाल तथा पुत्रियां - 1. श्रीमती अरुणा डी.के. जैन, जबलपुर 2. डॉ. कल्पना प्रमोद सिंघई, वर्जिनिया, अमेरिका में है।

आप सन् 1950 में योग से जुडे। योग के माध्यम से आपने अनेक मुनिराजों के सानिध्य में योग शिवरों का आयोजन कर योग दीक्षा प्रदान कर स्वस्थ जीवन का गुर सिखाया। योग के माध्यम से ही अनेक मुनिराजों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाया है। 75 वर्ष की आयु में आप आज भी योग शिक्षा देने के लिए सदैव तत्पर है और आज भी योग शिविरों के माध्यम से लोगों को स्वस्थ बनाएं रखने की प्रबल इच्छा आपके मन में है। आप गोलालारीय दर्शन पत्रिका के विशेष सहयोग सदस्य भी है व समय समय पर योग से संबंधित लेखों को भेजकर समाजजनों को इससे लाभांवित करने का सदैव प्रयास करते रहते है।

पर्वाधिराज दशलक्षण पर्व एवं क्षमावाणी हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न

मिलपीट्स, अमेरिका

सुभाष जैन, मिलपीट्स । अमेरिका के जैन सेंटर ऑफ नार्थन कैलीफोर्निया द्वारा संचालित जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया । प्रात: अभिषेक, शांतिधारा व पूजन सतना से पधारे पं. मुकेश कुमारजी के निर्देशन में पूर्ण भक्ति भाव से कराया गया । शाम को आरती पश्चात शाम के प्रवचन में समाजजनों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया । 300 से अधिक श्रावकों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया । फैन्सी ड्रेस व भगवान आदिनाथ स्वामी के जीवन पर बहुत ही सुंदर नाटिका का मंचन किया गया । शनिवार के दिन छोटे बच्चों ने सामूहिक पूजन कर जैन परम्परा का निर्वाह किया । अनंत चौदस के दिन भगवान वासुपूज्य स्वामी के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया । देश से दूर बसे समाजजनों ने पूर्ण मनोयोग से पयूर्षण पर्व का आयोजन कर धर्म प्रभावना का बेजोड़ उदाहरण प्रस्तुत कर सभी को अपने देश की यादों से कुछ पल के लिए जोड़ने का प्रयास करा है । पर्यूषण पर्व पश्चात क्षमावाणी पर्व का आयोजन परम्परानुसार मनाया गया जिसमें छोटे बड़ों ने एक दूसरे से क्षमा मांगी ।

लंदन, यू.के.

श्वेता जैन, लंदन । अपने देश से दूर विदेश में रह रहे हमारे जैन बंधुओं ने यहां भी पूरे भक्ति और उल्लास के वातवरण में पयूर्षण पर्व मनाया । लंदन के हौंसलो ईस्ट क्षेत्र में स्थित श्री कैलाशगिरी मंदिरजी में ग्यारह दिनों तक भक्ति की अनवरत धारा बहती रही । प्रात:कालीन अभिषेक, शांतिधारा, पूजन अर्चन में सभी रहवासियों बढ़ चढ़ कर भाग लिया । प्रतिदिन मंदिरजी में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे धार्मिक क्विज़, तंबोला और अनेक प्रकार के गेम्स आयोजित किये गये, जिसमें सबने पूर्ण उत्साह से भाग लिया । क्षमावाणी पर्व के दिन सभी ने परस्पर क्षमायाचना कर पर्यूषण पर्व का समापन किया । यहां कुछ परिवार आसपास रहते है किन्तु कुछ दूर से भी प्रतिदिन मंदिरजी आते है और परस्पर सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में रहते है । यहां बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए पाठशाला भी चलाई जाती है ।

तालबेहट

विशाल जैन पवा, तालबेहट । जैन धर्म के पयूर्षण महापर्व के समापन पर श्रीजी की शोभायात्रा निकालकर एवं क्षमावाणी महापर्व मनाया गया । कस्बे के पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर से विमानोत्सव कार्यक्रम में श्री जी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी जिसमें केसरिया वस्त्र धारण किये, श्रद्धालु श्रीजी को विमान में विराजमान कर चल रहे थे । सबसे आगे तैलीय चित्रों की झाँकी, डीजे बैण्ड की धार्मिक धुनों पर नृत्य करते युवा, सत्य-अहिंसा के नारे लगाते पुरूष वर्ग एवं मंगल गीत गाती हुई महिलाएँ चल रही थी । शोभायात्रा मुख्य मार्गों से होती हुई पुन: मन्दिर जी पहुँची । ब्रह्मचारिणी डॉ. उर्वशी दीदी के दिशा निर्देशन में कलशाभिषेक फूलमाल के बाद क्षमावाणी का आयोजन किया गया । जिसमें सभी धर्मावलाम्बियों ने गत वर्ष में हुई जानी-अनजानी गलतियों के लिए एक दूसरे से क्षमा माँगी । ब्रह्मचारिणी सुसीमा दीदी ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा की 'क्षमा ' से कलुषित आत्मा पवित्र होती है यह बहुत बड़ा धर्म है जो दान एवं त्याग की श्रेणी में आता है क्षमा माँगने की अपेक्षा क्षमा करना अधिक श्रेष्ठ है । सबसे क्षमा सबको क्षमा । रात्री में शास्त्र प्रवचन के अन्तर्गत दीदी ने कहा कि आत्म तत्व की अनुभूति के लिए हम ब्रह्मचर्य को धारण करते हैं । शील की रक्षा के लिए ब्रह्मचर्य जरूरी है, शीलवान व्यक्ति की देवता भी रक्षा करते हैं, उन्होंने माता सीता का वृतान्त सुनाया एवं बच्चों को शिक्षा से पहले संस्कार देने को कहा । उन्होनें कहा कि सती वह महान है जो सलाह देने में मंत्री के समान, बोलने में दासी के समान, भोजन में माता के समान, क्षमा और सहनशीलता में धरती के समान, पतिव्रता नारी एवं धर्म परायण राजा हमेशा पवित्र होते हैं, धर्म में चारित्र की पूजा होती है रूप की नहीं अत: सदाचार बहुत महत्वपूर्ण है । हमें समय नहीं कर्म काटने के लिए जीवन मिला है अत: हमेशा पुण्य करो । अन्त में विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किये गये एवं प्रश्नमंच का आयोजन किया गया एवं पुरस्कार वितरित किये गये । फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में नीरजा चौधरी प्रथम, संगीता मिठ्ठया एवं शिखा मोदी द्वितीय एवं जूनियर वर्ग में दिव्य राज पर्व राज प्रथम एवं भूमि मोदी-परी मोदी द्वितीय रहे । भजन प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में अंकिता चौधरी, गुनगुन सतभैया प्रथम एवं रोशनी मोदी, दीक्षा चौधरी द्वितीय एवं जूनियर वर्ग में नमन चौधरी प्रथम, वीर मोदी द्वितीय, मिती सिरसा तृतीय रहे । संचालन चौधरी चक्रेश जैन ने व आभार व्यक्त विशाल जैन पवा ने किया । सकल दिगम्बर जैन समाज का सहयोग रहा ।

जबलपुर

अरविंद कुमार जैन, जबलपुर । प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी पयूर्षण पर्व सानंद संपन्न हुये । नगर के सभी मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, अर्चना, सांध्यकाल में भजन व आरती का कार्यक्रम तत्पश्चात बच्चों के मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही अच्छे तरीके से संपन्न हुये । इस वर्ष जूड़ी तलैया जैन मंदिर में आचार्य श्री 108 विमर्श सागरजी महाराज के संसघ सानिध्य में संस्कार शिविर संपन्न हुआ तथा लार्डगंज मंदिर में मुनि 108 विद्यासागरजी महाराज के सानिध्य में सन्मति संस्कार शिविर में शहर एवं अन्य नगरों से पधारे शिविरार्थियों ने भाग लिया गया । गढ़ा पुरवा स्थित जैन मंदिर में आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ विराजमान है जिनके सानिध्य में दशलक्षण पर्व पर कई कार्यक्रम साआनंद संपन्न हुये । संस्था संरक्षक श्री राजकुमारी जैन द्वारा सायंकालीन प्रवचन मदन महल स्थित आमनपुर जैन मंदिर में दिये गये । पर्यूषण पर्व की समाप्ति के उपरांत मढ़ियाजी क्षेत्र में मेले का आयोजन किया गया जिसमें आचार्य विमर्श सागरजी महाराज, मुनिश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ एवं 105 सत्यमति माताजी संघ सहित मेले में आशीर्वाद देने पहुंची । आशीर्वाद उपरांत शांतिधारा का कार्यक्रम संपन्न हुआ । प्रत्येक मंदिर में क्षमावाणी पर्व परम्परानुसार मनाया गया जहां एक दूसरे ने अपने मन, वचन, काय से गत वर्षों में हुई गलतियों के लिए क्षमायाचना की । गोलालारीय समाज के सदस्यों द्वारा प्रतिवर्षानुसार अपनी कालोनी के मंदिरों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय योगदान देकर पुण्यलाभ कमावा ।

पावागिरी

विशाल जैन पवा । पर्यूषण महापर्व के समापन पर सिद्ध क्षेत्र पावागिरी में क्षमावाणी हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया । सुबह से ही भारी संख्या में धर्मावलंबियों ने पावागिरि पहुँच कर अतिशयवुक्त चमत्कारी बाबा मूलनायक भगवान पारसनाथ स्वामी का अभिषेक-शांतिधारा पूजन विधान कर पुण्यार्जन किया । मुख्य कार्यक्रम दोपहर की बेला में पुजारी श्री शिखरचन्द्र जैन गंज बासौदा के दिशा निर्देशन में आयोजित किए गए जिसमें बबीना से पधारे छोटेलाल राजेश कुमार टूंका एवं सुरेश कुमार मगरपुर ने आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र अनावरण कर दीप प्रज्वलित किया । ध्वजारोहण इमरतीबाई कस्तूरचन्द्र ललितपुर ने किया । राजकुमार धर्णेन्द्र खजुराहो, प्रसन्न कुमार अखिलेश गुंदेरा, प्रकाशचन्द्र कुड़ावनी एवं मिठया राजीव कुमार तालबेहट ने कलशाभिषेक और कमल किशोर सुमत कुमार अमित जैन वर्धुवां ने शांतिधारा की क्रियाएं सम्पन्न की । रवेन्द्र कुमार चकरपुर, डॉ. दीपचन्द्र नयाखेडा, अशोक कुमार विरधा एवं रूपचन्द्र जैन गोरा ने छत्र चढ़ाया एवं चंवर डुराये । मूलनायक भगवान के शिखर पर ध्वजारोहण कर डॉ. जयकुमार जैन चकरपुर के परिवार ने मंगल आरती की क्रिया सम्पन्न की । फूलमाल के कार्यक्रम में डॉ. दीपचन्द्र नयाखेड़ा को दर्शनमाला डॉ. सुरेशचन्द्र तालबेहट को ज्ञानमाल, महेन्द्र कुमार चकरपुर व सुनील कुमार चकरपुर को चारित्रमाल भेंट की गयी तत्पश्चात क्षमावाणी का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने गत वर्ष में की गयी गलतियों एवं भूलों के लिए एक दूसरे से क्षमा मांगी । इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि कलुषित आत्मा को पवित्र करने के लिए क्षमा भाव बहुत आवश्यक है जो पर्यूषण पर्व का पहला धर्म है । इस मौके पर शिखरचन्द्र, मिठया संतप्रसाद, चौधरी चक्रेश कुमार, निर्मल कुमार, प्रवीण जैन, उत्तमचन्द्र, आनन्द, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र जैन टूंका, अटल जैन नयाखेड़ा, राकेश मोदी सहित सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद रहे । संचालन ज्ञानचन्द्र पुरा ने किया । आभार प्रदर्शन प्रेमचन्द्र नयाखेड़ा एवं जयकुमार कंधारी ने संयुक्त रूप से किया ।

बबीना

विनोद जैन, बबीना । नगर के शान्तिनाथ जिनालय में पर्यूषण पर्व के समापन पर मुनि संस्कार सागरजी महाराज के पावन सानिध्य में भगवान का वार्षिक कलशाभिषेक व शांतिधारा हर्षोल्लासपूर्वक किया गया । मुनि संस्कार सागर जी महाराज के सानिध्य में भगवान पूजन - अर्चन की क्रियायें की । तदुपरांत श्रावक-श्रेष्ठी राजेन्द्र जैन टूंका बालों ने ध्वाजरोहण किया । सुमत जैन बुढ़पुरा, सुरेश कुमार जैन मगरपुर, अटल कुमार नयाखेड़ा ने भगवान की अभिषेक की क्रियायें की । राजकुमार जैन नरेन्द्र कुमार जैन चकरपुर, सन्दीप जैन बिरधा, सुनील कुमार जैन बुढपुरा ने भगवान को चवर डुरावे । प्रेमचन्द जैन नयाखेड़ा ने भगवान की मंगल आरती उतारी । इसके बाद राजेन्द्र कुमार जैन चकरपुर, डॉ. जयकुमार जैन व सुरेन्द्र कुमार जैन चकरपुर, सिंघई कैलाशचन्द्र, आदेश कुमार जैन गेवरा फूलमाल, ज्ञानमाल, चारित्रमाल व क्षेत्रमाल का सौभाग्य प्राप्त किया । मुनिश्री ने कहा कि मौका मिलने पर हमें धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिये एवं पाप कर्म से दूर रहना चाहिये । जिस तरह धूप निकलने पर ओंस की बूँदें समाप्त हो जाती हैं एवं अंजुली का पानी समाप्त हो जाता है, उसी तरह क्षण भर में व्यक्ति का जीवन भी समाप्त हो जाता है इसलिये जीवन में जब भी कभी पुण्य कार्य करने का अवसर मिले, तो उसे छोडना नहीं चाहिये । कार्यक्रम में अनेक समाजजन मौजूद रहे । संचालन पं. विनोद जैन शास्त्री ने किया ।

अहमदाबाद

संजीव जैन, अहमदाबाद । पर्वराज पयूर्षण के मंगल समापन पश्चात गोलालारीय दि. जैन समाज वस्त्राल द्वारा क्षमावाणी पर्व एवं उपवासी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया । जिसमें समाजजनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता दर्ज कराई । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुमेरचंद जैन ने की । क्षमा पर्व पर वक्ताओं ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए गये । कार्यक्रम मे दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये एवं तपसाधना करने वाले श्रावको श्रीमति कुसुम जैन हरकिशन जी, जिनेश्वरदास जी एवं सोनिया जैन का सम्मान मुख्य अतिथियों द्वारा किया गया । उपस्थित समाजजनों ने उनके तप की अनुमोदना की । कार्यक्रम के पश्चात वात्सल्य भोज का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का संयोजन अरूण कुमार मक्खन लाल, अशोककुमार सेतूलाल, नीलेश कुमार रमेशचन्द्र, नीलेश कुमार प्रदीप कुमार, उमेश कुमार प्रेमचन्द, मनीष कुमार जयकुमार, मनोज कुमार गिलौजीलाल, संजय कुमार, मानक जैन एवं अंजना बेन प्रदीप कुमार द्वारा किया गया । संचालन संजीव कुमार ने किया ।

*** समाज के माननीय सदस्यों से सादर अनुरोध है कि आपके द्वारा गोलालारीय दर्शन पत्रिका में किसी भी मद में आपके द्वारा नगद/चेक द्वारा राशि जमा कराई गई हो (सीधे बैंक खाते में इन्दौर कार्यालय या क्षेत्रीय प्रतिनिधियों) और आपको रकम की रसीद प्राप्त नही हो पाई हैं तो आप हमें 9424013136 पर दोपहर 3 से रात 10 बजे तक सूचित कर सकते हैं ताकि आपको शीघ्र ही रसीद भिजवाने की व्यवस्था की जा सके। गोलालारीय दर्शन में सदस्यता शुल्क का विवरण पत्रिका पर लगे पते के स्टीकर पर उल्लेखित हैं। किसी भी प्रकार के सुधार के लिए आप चर्चा करते समय स्टीकर पर अंकित सदस्यता क्रमांक अवश्य बताएं ताकि उचित सुधार संभव हो सके।**

रजत जयंती की ओर अग्रसर देश की पहली सहकारी साख संस्था

सुधेश जैन, इन्दौर। संपूर्ण भारत में गोलालारीय समाज की प्रथम सहकारी साख संस्था ''पार्श्वनाथ सहकारी साख संस्था'' का गठन 23 मार्च 1993 को समाज सदस्यों के सहयोग से किया गया था। संस्थापक अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जैन साइकिल वालों के प्रयासों एवं श्री रमेशचंद्र जी जैन क्लर्क कॉलोनी के मार्गदर्शन में गोलालारीय समाज की पहली साख संस्था 25 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई थी।

संस्था की 24 वीं साधारण सभा 24 सितम्बर को समाज न्यास भवन पर आयोजित की गई जिसमें पूर्व अध्यक्ष विजय कुमार जैन ''बियाबानी'', वर्तमान अध्यक्ष श्री सुधेश जैन, उपाध्यक्ष श्री अरूण जैन व संगीता सुनील जैन व संचालकगण श्रीमति कल्पना जैन, श्री आलोक जैन, शैलेष जैन व संस्था सदस्यों की उपस्थिति में गतवर्ष के आर्थिक प्रतिवेदनों पर चर्चा हुई। सदस्यों को दिए जाने वाले ऋण की राशी व नियमों पर चर्चा हुई। सदस्यों की कार्यक्रमों की सूचना समय पर हो सके। ऐसी व्यवस्था बनाने पर जोर दिया गया। संस्था अपने सदस्यों को परिवार कल्याण योजना का लाभ नियमित रूप से प्रदान कर रही है। जिसमें सदस्य की मृत्यु होने पर एक निश्चित धनराशी संस्था द्वारा प्रदान की जाती है। इसके लिए सदस्य को अपने खाते को नियमित रखना अति आवश्यक होता है। संस्था सदस्यों को प्रतिवर्ष लाभांश का वितरण किया जाता है। जमाराशि पर प्रदत्त ब्याज को वर्षांत पर बचत खाते में जमा कर दिया जाता है जिससे सदस्यों की राशि प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है।

संस्था का रजत जयंती समारोह जनवरी 2018 में भव्य रूप से मनाने का निर्णय लिया गया है जिसमें संस्था के सभी सदस्यों आमंत्रित कर उपहार वितरित करने की योजना प्रस्तावित है।

सभा का संचालन पूर्व अध्यक्ष विजयकुमार जैन ने किया। अध्यक्ष श्री सुधेश जैन ने सदस्यों का आभार प्रकट करते हुए सदस्यों को स्वल्पाहार के लिए आमंत्रित किया।

इन्दौर गोलालारीय समाज की वार्षिक साधारण सभा संपन्न

कोमलचंद जैन, इन्दौर। समाज न्यास की 16वीं वार्षिक साधारण 20 अगस्त को साआनंद संपन्न हुई जिसमें वर्ष 2015-16 की साधारण सभा की कार्यवाही की पुष्टि तत्पश्चात 2016-17 के वित्तीय पत्रकों को स्वीकृति प्रदान की गई। सचिव श्री बाहुबलीजी ने उपस्थित सदस्यों को बताया कि प्रस्तावित निर्माणाधीन मंदिरजी की पुरानी जगह को बदलकर कुम्हेड़ी में ही मेन रोड़ पर एक प्लाट ले लिया है, यह भूमि मेन रोड़ पर होने के कारण समाज कार्यकारिणी का इस भूमि पर मंदिर निर्माण करने की विशेष रुचि है। जिस पर जल्द ही नवीन मंदिरजी का निर्माण होना है। आगामी स्नेह सम्मेलन जो कि जनवरी 2018 में करना प्रस्तावित है और उसी समय नवीन भूमि पर भूमि पूजन व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने का विचार समाज की साधारण सभा में लिया गया जिसे उपस्थित सदस्यों ने अपनी सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। समाज की पारिवारिक निर्देशिका 'प्रयास' व ई-डायरेक्ट्री जल्दी ही सदस्यों को उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। समाज सदस्यों से आग्रह है कि वे समाज का वार्षिक लागा नियमित रखे ताकि समाज विकास के कार्य सुचारु रुप से संचालित किये जा सके। अंत में उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमारजी ने आभार माना और सभा समाप्ति पश्चात स्वल्पाहार के लिए आमंत्रित किया।

इन्दौर नगर की पारिवारिक निर्देशिका 'प्रयास' का अंतिम प्रूफ दिसम्बर माह में आपको प्रेषित किया जावेगा। मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में निवास कर रहे गोलालारीय परिवारों से अंतिम अनुरोध है कि वे अपनी पारिवारिक जानकारी न्यास के पते 64, न्यू देवास रोड़ पर 30 नवम्बर 2017 तक भेजने का कष्ट ताकि पारिवारिक जानकारी को प्रकाशित किया जा सके।

बच्चों में स्वर्णप्राशन का स्वास्थ्य संबंधी लाभ एवं महत्व

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में जिस प्रकार बच्चों को रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए और बच्चों को सामान्य बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण (vaccination) का इस्तेमाल किया जाता है उसी प्रकार आयुर्वेद के काल से बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सुवर्णप्राशन संस्कार या विधि की जाती है। यह एक प्रकार का आयुर्वेदिक प्रतिरक्षा (Immunization) की प्रक्रिया है।

सुवर्णप्राशन : सुवर्णप्राशन के अंदर सुवर्ण भस्म, वच, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, आमला, मुलेठी, गिलोय, बहेड़ा, शहद और गाय के घी जैसी आयुर्वेदिक औषधियों का इस्तेमाल होता है। बच्चों के पूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास में सहायक होता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि में सहायक होता है। पाचन क्रिया की शक्ति में सहाबक होता है। प्रदूषण जनित एलर्जिक व्याधियों से बचाव में सहायक। बच्चों के दांत आने के दौरान होने वाले बुखार दस्त में फायदेमंद। स्वर्णप्राशन प्रत्येक माह के पुष्य नक्षत्र दिवस पर निर्धारित समय पर दिया जाता है आगामी दो माह की तिथियाँ निम्न है -

*** 9 नवम्बर गुरूवार रात्रि 1.38 बजे से 10 नवम्बर शुक्रवार रात्रि 12.22 बजे तक * 6 दिसम्बर बुधवार रात्रि 10.01 बजे से 7 दिसम्बर गुरूवार रात्रि 7.56 बजे तक।** हर माह पुष्य नक्षत्र के दिन श्री विद्यासागर वेलनेस सेंटर (महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइस एंड रिसर्च आरजीपीवी के पीछे, नई जेल रोड़ के पास, बडबई) भोपाल में डॉ. रेखा जैन, सेवानिवृत्त डी.एस.पी. के संयोजन में डॉ.नीलम जैन (एम.डी. पीडियाट्रिक्स), मृत्युंजय माली (एम.डी.आयुर्वेद) एवं अमित गुप्ता (एम.डी. आयुर्वेद) के द्वारा जनरल हेल्थ चेकअप करने के बाद बच्चों को सुवर्णप्राशन बिंदु दिया जायेगा। सुविधा का लाभ लेने के लिए व मिलने का समय पहले ही निश्चित करने के लिए संपर्क करें। **संपर्क सूत्र - 9109114096, 9109114100, 9109114093, 9109114060**

गंजबासौदा में दशलक्षण पर्व साआनंद संपन्न -

शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा। दशलक्षण पर्व पर्यूषण पर्व के समापन पर क्षमावाणी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। घूसरपुरा पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिरजी से श्रीजी का विमान चल समारोह नगर के मुख्य मार्गों से होता हुआ महावीर विहार में समाप्त हुआ। जिसमें सकल जैन समाज सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों एवं जन प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। चल समारोह में श्रद्धालुजन विमानजी को शुद्ध वस्त्र धारण किये धोती दुपट्टे में अपने कंधो में लेकर चल रहे थे। वहीं विभिन्न मंदिरों की पाठशालाओं की बहनों द्वारा आकर्षक झांकियां संजाई गई थी जबकि वीर सेवा दल और श्री विद्यासागर सेवादल के कार्यकर्ताओं द्वारा दिव्य घोष करते हुए चल रहे थे। चल समारोह में बड़ी संख्या में महिलाये और पुरुष वर्ग शामिल थे।

चल समारोह का अनेक स्थानों पर नागरिकों, संगठनों, संस्थाओं और जन प्रतिनिधियों ने स्वागत किया। महावीर विहार में चल समारोह के बाद शांतिधारा व किरण दीदी के प्रवचन हुये तत्पश्चात क्षमावाणी का कार्यक्रम किया गया, जिसमें सभी ने एक दूसरे से क्षमा याचना की और फिर पात्र भावना (सहभोज) किया गया। इसके पूर्व पर्यूषण पर्व तपसाधना की भावना के साथ सानंद संपन्न हुये। प्रत्येक मंदिरजी में प्रवचनार्थ विद्वानों को नगर के बाहर से आमंत्रित किया गया था। पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर स्टेशन मंडी में बाल ब्रह्मचारिणी किरण दीदी के सानिध्य में प्रात: अभिषेक, शांतिधारा एवं सामूहिक पूजन का कार्यक्रम संगीतमय संपन्न हुआ। शाम को संगीतमय सामूहिक आरती व किरण दीदी के दशलक्षण पर्व पर सारगर्भित प्रवचन होते थे व रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुए।

भारतीय जैन मिलन शाखा गंज बासौदा द्वारा ''अंधेरे में ढूढ़ों'' प्रतियोगिता रखी गयी थी जिसमें बड़ी संख्या में जैन परिवारो ने कार्यक्रम में भागीदारी की व 27 अगस्त को मंदिर समिति द्वारा म्यूजिकल अंताक्षरी का आयोजन किया गया। 28 अगस्त को महिला भक्ति मंडल के सानिध्य में भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 29 अगस्त को वीर सागर पाठशाला के बच्चों द्वारा नाट्य मंच व 30 अगस्त को आचार्यश्री विद्यासागरजी मुनिराज पर केन्द्रित संस्मरण प्रतियोगिता आयोजित की गई

दिनांक 2 सितम्बर को भारतीय जैन मिलन के बैनर तले एक मैजिक शो का कार्यक्रम स्व. श्री नंदनलालजी दिवाकीर्ति की स्मृति में उनके सुपुत्र डॉ. अनिल दिवाकीर्ति द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें जयपुर से पधारे कलाकारों द्वारा जादू दिखाया व सिखाया गया। दिनांक 3 सितम्बर को श्री दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप गंजबासौदा के बैनर तले शांतिकुमार जैन के प्रयासों से योगीराजजी की मुंबई द्वारा बनाई गई फिल्म ''अब तो संभल जा'' दिखाई गयी, जिसे सभी ने सराहा।

पेज 1 का शेष.....देशना में उपस्थित जन समूह को भव्य संबोधन दिया। मुनि श्री प्रणीत सागर जी ने क्षमा धर्म के विपरीत क्रोध को परिभाषित करते हुये क्रोध की तुलना अंग्रेजी शब्द 'क्रो' अर्थात कौआ से की जो सबका भक्षण कर लेता है इसी प्रकार क्रोध मनुष्य के समस्त सद्गुणों का भक्षण (नष्ट) कर देता है। क्रोधी को दुर्गति से कोई नहीं बचा सकता, अत: कर्म बंध से बचें और क्षमाधर्म धारण करें। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुये मुनि श्री 108 आस्तिक्य सागर जी ने मुनिवों को क्षमा की मूर्ति बताया उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि अपने भावों को निर्मल करें और अपनें शत्रुओं से क्षमा माँगे जिससे अंतरंग में विशुद्धि आयेगी। भावों का घात करना भी हिंसा है। अत: भावों में निर्मलता लाने के लिये जीवमात्र से क्षमा माँगें। मुनि श्री ने अपने उद्बोधन में गोलालारीय समाज द्वारा किये समाजोपयोगी कार्यों की सराहना की। मुनिद्वय ने समाज के मुखपत्र गोलालारीय दर्शन के प्रतिभाशाली विशेषांक में प्रकाशित विद्यार्थियों के विवरण एवं चित्रों की प्रशंसा की एवं **'प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का...'** का पत्रिका के विमोचन की भी सराहना की जो कि समाज के युवक युवतियों के संबंधों को जोड़ने में महती भूमिका निभा रही है। जिस प्रकार यह पत्रिका रिश्तों को जोड़ने का प्रयास कर रही है उसी तरह समाज नेतृत्व का दायित्व है कि वे समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़कर उनके विकास हेतु तत्पर रहे। मुनिश्री ने गोलालारीय समाज से अपने जन्म संबंध को याद करते हुए कहा कि ''घर का बेटा घर का ही होता है''। आज मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे पूज्य गुरुवर ने मुझे अपने गृहस्थ जीवन के समाजजनों को संबोधित करने का अवसर प्रदान किया है। इस अवसर पर कक्षा 1 से 12वीं तक के मेधावी विद्यार्थियों व पर्यूषण पर्व में तपसाधना करने वाले साधकों का सम्मान किया गया। उन्होंने समाज की प्रगति को देखते हुए समाज जनों व समाज पदाधिकारियों के कार्य की सराहना की तत्पश्चात् क्षमावाणी कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन सुधेश जैन ने किया व आभार अध्यक्ष कोमलचंदजी जैन ने किया।

तपसाधना करने वाले सम्मानीय श्रावकगण

पदमा राजेन्द्र जैन
इन्दौर

रेशू-निशांत जैन
इन्दौर

नेहा-दीपक जैन
इन्दौर

रेखा-अशोक जैन
इन्दौर

नागेन्द्र जैन
इन्दौर

सौरभ जैन
इन्दौर

सुधीर धमसैया
इन्दौर

बिंजल-आशीष जैन
इन्दौर

पिंकी शैलेष जैन
इन्दौर

अंजली विनय जैन
भोपाल

नयना मुकेश जैन
भोपाल

नीतू जैन
कानपुर

आशीष जैन
मणीनगर

नीता राजीव जैन
भोपाल

मैना जयकुमार जैन
इन्दौर

विनम्र श्रद्धांजली

* श्री राजेश बाबूलाल की धर्मपत्नी **श्रीमती ममता जैन** का निधन 16 जुलाई को इन्दौर में हो गया । आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक कार्यों में काफी रुचि लेती थी ।

* श्री स्वदेशीलालजी की धर्मपत्नी **श्रीमती पुष्पा जैन** का निधन इन्दौर में 1 अगस्त को हो गया । आपके परिवार ने आपकी स्मृति में गोलालारीय समाज मंदिर को ₹5000 , गोलालारीय समाज न्यास को ₹ 5000 व गोलालारीय दर्शन पत्रिका को ₹ 1100 दिये ।

* स्व. डॉ. बाहुबली कुमार जैन के सुपुत्र तथा डॉ. आलोक, डॉ. अपूर्व जैन के पिता **डॉ. अशोक कुमार जैन** का आकस्मिक निधन 30 अगस्त को ललितपुर में हो गया । आप सामाजिक कार्यों में रुचि रख यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहे ।

* **श्रीमती निर्मलादेवी जैन** पत्नि स्व. निर्मलचंद जैन का स्वर्गवास 14 सितम्बर को हो गया है ।

* स्व. श्री कामताप्रसाद के छोटे पुत्र **श्री अभय जैन** का निधन 26 सितम्बर को हो गया ।

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

नोट - विधिवत जानकारी प्राप्त होने पर ही शोक संदेश का सचित्र प्रकाशन किया जावेगा।

समाज ने खोया जीवट और कर्मठ व्यक्तित्व

सेठ चम्पालाल जैन नौहरकलां की पृष्ठभूमि ललितपुर के नौहरकलां गांव से है । ग्रामीण परिवेश के प्रतिष्ठित परिवार श्री गनपतलालजी एवं श्रीमती कस्तूरीबाई के छोटे पुत्र के रुप में आपने अपनी बौद्धिक क्षमता, कुशाग्र बुद्धि व कुशल व्यवसायिक क्षमता के बल पर ग्रामीण परिवेश से हटकर कुछ ऐसा करने का दृढ़निश्चय कर रखा था जिसके आधार पर आप धार्मिक कार्यों सहित समाज हित में संलग्न रहकर अधिक से अधिक लोगों की मदद कर सके । आपके हृदय में समाज व समाजजनों के प्रति सदैव स्नेह व सहयोग की भावना रही । किसी भी धार्मिक व सामाजिक आयोजन में या समाज के किसी भी सदस्य को किसी भी प्रकार की मदद की आवश्यकता रही हो आपने हर समय खुले मन से बढ़ चढ़कर सहयोग किया । कई धार्मिक व सामाजिक आयोजन के अवसरों पर आयोजकों को दृढ़ता पूर्वक कह देते कि अच्छा काम करो, खर्चे की चिंता मत करो मै हूँ, आयोजन ऐसा हो कि सब लोग याद रखें । आप की दृढ़ता, स्पष्टवादिता व तत्काल निर्णय लेने की क्षमता सभी को सदैव आपकी याद दिलाती रहेगी । सादा जीवन उच्च विचारों को अपने व्यक्तित्व में समाहित करते हुए आपने निरंतर सफलता के नए आयाम गढ़े है, उसकी परिणति यह है कि चिर निद्रा में जाने के पूर्व आपने अपने परिवार, समाज व देश के कई धार्मिक व सामाजिक संगठनों में उत्कृष्ट स्थान बना कर अपनी अमिट छाप छोड़ी है । रेलवे ठेकेदार के रुप में आपका कार्य क्षेत्र झांसी व भोपाल रेल मंडल रहा । कार्य के प्रति समर्पण व ईमानदारी की भावना के दम पर आप उत्तरोत्तर प्रगति करते रहे । समवानुसार कार्य में विस्तार के साथ आपके तीनों पुत्रों ने सहयोग प्रदान कर इस कार्य के अतिरिक्त अन्य कई संस्थान स्थापित कर उन्हें शिखर पर पहुंचाया । धार्मिक व सामाजिक कार्यों में पूर्ण मनोयोग से खुले मन से अपनी सहभागिता प्रदान करना आपकी जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा था जो अब आपके परिवार की विरासत बन गई जिसे आपके पुत्र बखूबी निभा रहे है श्री प्रदीप कुमार व श्री प्रसन्न कुमार भोपाल, ललितपुर, झांसी व बुंदेलखंड के साथ साथ देश भर के कई तीर्थ क्षेत्रों पर मुक्त हस्त से दान देने की परम्परा को बनाए रखा है । श्री देवगढ़जी के पुनरोद्धार के साथ गौशाला, धर्मशाला, औषधालय व सर्वसमाज के लिए व्यायाम शालाओं का निर्माण कर उन्हें निरंतर संचालित करने के लिए आपका परिवार सदैव तत्पर रहता है ।

आपका विवाह देवरान के सिंघई श्री हजारीलाल की सुपुत्री गेंदाबाई से हुआ । आपके तीन पुत्रों में से एक पुत्र श्री पवन व पपौत्र का निधन एक दुर्घटना में हो गया जिसका आपको गहरा आघात लगा परन्तु आपने दृढ़ता के साथ सामाजिक गतिविधियां बरकरार रखी । आपकी प्रेरणा से आपके परिवार ने समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए देश के प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्रों की वंदना हेतु प्रतिवर्ष रिजर्व बस के माध्यम से यात्रा का आयोजन करा । आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों की लड़कियों की शिक्षा व उनके विवाह में हर तरह का आर्थिक सहयोग देकर सच्चे मायनों में बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं की भावना को सार्थक करा है ।

गंभीर बीमारी से पीड़ित समाजजन को उचित परामर्श व चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में आपने कभी संकोच नहीं करा, हर संभव सहायता प्रदान कर निरंतरता बनाए रखी ।

जैन धर्म की आत्मा के अनुरूप "जिओ और जीने दो" की भावना के साथ आपने समभाव से समाज के हर वर्ग की सहायता की । आपके मन में कभी भी पद की लालसा नहीं रही, तीर्थ क्षेत्रों के साथ शिक्षा संस्थानों की आपने दिल खोलकर मदद की । श्री वर्णी जैन इंटर कॉलेज को सहयोग प्रदान कर अपने आप को सौभाग्यशाली मानते थे। नगर में आयोजित 6 पंच कल्याणक में आपकी सक्रिय भूमिका रही । देवगढ़ में मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज जी के सानिध्य में पंच गजरथ महोत्सव में सक्रिय भूमिका के साथ एक मंदिर का पुनरुद्धार कराया । अतिशय क्षेत्र सेरोनजी में जिनबिम्ब की स्थापना, ललितपुर में नव गजरथ में मुख्य पात्र बनकर 1008 भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापित करायी । सिरोंजजी व पचाजी में संपन्न पंचकल्याणक में मुक्त हस्त से दान कर गौशाला व अन्य कार्यों में सहयोग प्रदान करा । विश्व की पौराणिक व आध्यात्मिक धरोहर को स्वयं में समेटे हुए अतिशय क्षेत्र देवगढ़जी में को आपने व्यावसायिक सेवानिवृत्ति के बाद कर्मभूमि के रुप में चुना । इस क्षेत्र को पर्यटन के रुप में विकसित कर दर्शनार्थियों की संख्या में वृद्धि करने का श्रेय आपको ही जाता है । गत 13 वर्षों से अध्यक्ष पद का दायित्व संभालते हुए आपने ललितपुर से निशुल्क बस व भोजन व्यवस्था का मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागरजी के समक्ष लिया गया संकल्प अंतिम समय तक अनवरत जारी रहा । आप अखिल भारतीयर दिगम्बर जैन गोलालारीय परिषद के संस्थापक व आजीवन राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे । आपकी सदा यही इच्छा रही कि गोलालारीय समाज का संगठन सक्रिय व सशक्त बने। इन्दौर व भोपाल में आयोजित गोलालारीय परिषद की बैठक में गोलालारीय दर्शन के संपादक मंडल से चर्चा के समय आपने व्यक्त की थी प्रत्येक नगर में गोलालारीय समाज की सक्रिय संस्था का निर्माण हो और उन संस्थाओं के प्रतिनिधि राष्ट्रीय स्तर की सक्रिय व सशक्त गोलालारीय परिषद का संचालन करे व समग्र जैन समाज में अपने समाज को गौरवांवित करे परन्तु कुछ कारणों से यह संगठन उनकी इच्छानुरुप कार्य करने में सफल नहीं हो सका । आप गोलालारीय दर्शन के शिरोमणि संरक्षक व परामर्श प्रमुख भी थे । आपने अन्य संस्थाओं अखिल भारतवर्षीय तीर्थसभा के आजीवन सदस्य, श्री सेरोनजी अतिशय क्षेत्र के आजीवन संरक्षक सदस्य, विराग जन कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक संरक्षक, ललितपुर दिगम्बर जैन समाज द्वारा संचालित गौशाला के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री ललितपुर दिगम्बर जैन गोलालारीय समाज के वरिष्ठ संरक्षक, श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ अटा मंदिर के पूर्व प्रबंधक सहित उत्तर रेलवे ठेकेदार एसोसिएशन के चार्टर्ड अध्यक्ष रहकर अपना बहुमूल्य योगदान दिया। चिरनिद्रा में विलीन होने के पूर्व कुछ घंटो तक परिवार व अन्य लोगों से सहृदय आत्मीयता से मिलकर देवदर्शन के 6 घंटे पश्चात 1 सितम्बर को देवलोकगमन हो गया । इस कर्मठ, जुझारु, स्पष्ट वक्ता श्री चम्पालालजी नौहरकलां के निधन का समाचार जिसने भी सुना वह स्तंब्ध रह गया । **- संपादक**

अखिल भारतीय दिगम्बर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंपालालजी के आकस्मिक अवसान से पूरा समाज आहत एवं स्तब्ध है । आदरणीय सेठजी ने अध्यक्ष पद पर रहते हुए कई सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किए । इसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है । उनकी कमी समाज को हमेशा खलती रहेगी ऐसे दानवीर सेठ श्री आज हमारे बीच नहीं हैं । उन्होंने समाज का सदैव दिल खुलकर सहयोग किया । स्थानीय संगठनों को किस प्रकार से मजबूत किया जाये यह भावना उनमें हर समय रहती थी क्योंकि स्थानीय संगठन के मजबूत होने पर राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत संगठन का निर्माण किया जा सकेगा । उनके विचार थे कि राष्ट्रीय स्तर के पदाधिकारियों को आगे बढ़कर स्थानीय संगठन को मजबूत करने की कार्यवाही कर एक सशक्त व सुदृढ़ राष्ट्रीय संगठन का निर्माण करना चाहिये जो समग्र जैन समाज में अपनी अलग पहचान बनाकर कंधे से कंधा मिलाकर जैन समाज की जवाबदारियों को निभा सके । अपने जिस संस्था को उन्होनें बच्चे की तरह पाला बड़ा किया, आज उनकी अनुपस्थिति में अखिल भारतीय गोलालारीय परिषद के सभी पदाधिकारियों को मनन करना चाहिए कि हमारी संस्था सुचारू रूप से कैसे चले एवं संगठात्मक कार्य व संस्था का संगठन मजबूत कैसे बने? इस पर सही दिशा में प्रयास हो, वही सेठ श्री चम्पालालजी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी । - संजीव जैन, अहमदाबाद

सादर अनुरोध - अपने परिजनों की स्मृति में गोलालारीय दर्शन पत्रिका के लिए दान देकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें ।

अश्रुपुरित श्रद्धांजलि

अवसान दिनांक – 1.09.2017

सेठ चम्पालालजी जैन "नौहरकलां"

शोकाकुल परिवार –

जिनेश्वरदास (कानपुर)
हुकुमचन्द (कानपुर)
वीरकुमार (कानपुर)
विजयकुमार (फरीदाबाद)
श्रीमति कृष्णा–देवेन्द्र कुमार
श्रीमति सारजनी–राजकुमार
श्रीमति साधना–सुनिलकुमार

श्रीमती गेंदाबाई जैन (धर्मपत्नि)
श्रीमती रेखा–प्रदीपकुमार जैन, भोपाल
श्रीमती साधना–स्व.श्री पवनकुमार जैन, ललितपुर
श्रीमती ममता–प्रसन्नकुमार जैन, ललितपुर
श्रीमती डिम्पल–शैलेन्द्र जैन (उज्जैन)
श्रीमती समीक्षा– महावीर जैन (उज्जैन)
प्रतीक, अमन, प्रज्ञान, तन्मय, आर्यन जैन
राकेश कुमार एवं समस्त नौहरकलाँ परिवार

प्रतिष्ठान :

* मे. चम्पालाल जैन (रेल्वे ठेकेदार) * मे. कक्का जी बिल्डर्स (रेल्वे ठेकेदार)
* मे. पी.के. जैन (रेल्वे ठेकेदार) * मे. महावीर शॉप, उज्जैन

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा प्रिंटिंग्स 127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स जोन कम्प्यूटर एंड प्रिंटिंग्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित